परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय

अभ्यास पत्रक (Worksheet) Module – 2 (Solved)

काव्य खंड – सवैये (रसखान)

कक्षा – नौवीं विषय – हिंदी आद्याक्षर(Initials) – इंदु

प्र 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें -

क) कवि तीनों लोकों का राज्य किसके बदले छोड़ने को तैयार है ?
उ०- कवि तीनों लोकों का राज्य उस लाठी और कंबल के बदले छोड़ देना चाहता है जिसे लेकर कृष्ण गायें चराया करते थे |

ख) कवि नंद की गायें चराने के बदले किसका त्याग करने को तैयार है ?
उ०- कवि नंद की गायें चराने के बदले आठों सिद्धियों और नवों निधियों का सुख त्यागने को तैयार है |

ग) ब्रज क्षेत्र के करीलों पर कवि क्या न्योछावर करना चाहता है ?
उ०- ब्रज क्षेत्र के करीलों पर कवि करोड़ों सोने के भवनों का सुख न्योछावर करना चाहता है|

घ) दूसरे सवैये में रसखान की कैसी भक्ति का पता चलता है ?
उ०- काव्यांश से कवि की अनन्य भक्ति का पता चलता है | वह अपने प्रभु का सानिध्य हर स्थिति में पाना चाहता है |

ङ) कवि श्री कृष्ण का सानिध्य पाने के लिए किन-किन भौतिक सुखों का त्याग करने को तैयार है ?
उ०- कवि श्री कृष्ण का सानिध्य पाने के लिए नाना प्रकार की सुख सुविधाएँ त्यागने को तैयार है | वह तीनों लोकों के साम्राज्य का सुख, आठों सिद्धियों तथा नवों निधियों के वैभव का सुख तथा सोने के करोड़ों महलों का सुख त्यागने को तैयार है |

च) कवि ब्रज के वन-बाग और तालाब क्यों देखना चाहता है ?
उ०- कवि कृष्ण और उनसे जुड़ी हुई हर वस्तु से विशेष लगाव रखता है | उनमें कवि को कृष्ण की यादें जुड़ी महसूस होती हैं | ऐसी वस्तुओं को देखने, छूने से कवि को आनंद की अनुभूति होती है, इसलिए वह ब्रज के बाग और तालाब देखना चाहता है |

छ) काव्यांश से कवि के बारे में क्या पता चलता है ?
उ०- काव्यांश से पता चलता है कि कवि श्री कृष्ण का अनन्य भक्त है |

ज) एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है ?
उ०- कवि श्री कृष्ण का अनन्य भक्त है | वह कृष्ण के हर वस्तु से प्रेम करता है | श्री कृष्ण गायों को चराते समय यह लकुटी और कामरिया (कंबल) अपने साथ रखते थे | यह लकुटी और कामरिया कोई साधारण वस्तु न होकर कृष्ण से संबंधित वस्तुएँ थीं, इसलिए कवि उन पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार है |

प्र 2. निर्देशानुसार उत्तर दें –

क) समानार्थक शब्द लिखें –

कोटिक – करोड़ों　　कलधौत – सोना

वारौं – न्योछावर　　बिसारौं – भूलूँ

क) अलंकार पहचानें –

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं – अनुप्रास अलंकार

ख) भाव स्पष्ट करें –

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं |

<u>भाव</u> :- इस पंक्ति में कवि रसखान का श्रीकृष्ण से जुड़ी वस्तुओं के माध्यम से उनके प्रति अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है | श्री कृष्ण गोपियों के साथ इन करील के लताओं की छाँव में रासलीला रचाया करते थे | कवि के लिए इन करील कुजों का अत्यधिक महत्व है | वह इन कुंजों को सैकड़ों स्वर्ण-भवनों से भी ज्यादा प्रिय एवं कीमती मानते हैं |

ग) पर्यायवाची लिखें –

सोना – स्वर्ण, कनक　　आँख – नेत्र, नयन